NAAC ACCREDITED "B++" (CGPA 2.89)

Yogoda Satsanga Mahavidyalaya

Jagannathpur, Dhurwa, Ranchi-834004

www.ysmranchi.net

ysmranchi4@gmail.com

Course : MJ 1 **Sem : 1**

Lesson : Indian Educational System

By : Dr. Amrita Dutta

© All Copyrights are Reserved

This Video is an Intellectual Property of Yogoda Satsanga Mahavidyalaya, Dhurwa, Ranchi, Jharkhand

भारतीय शिक्षा प्रणाली (Indian Education System in Hindi) लंबे समय से दुर्गमता और निम्न गुणवत्ता वाली शिक्षा का सामना कर रही है, जिससे भारतीय बेरोजगार हो गए हैं। नतीजतन, भारत के मानव संसाधन अपनी पूरी क्षमता तक नहीं पहुंच पा रहे हैं। किसी देश की प्रगति के लिए सबसे महत्वपूर्ण साधनों में से एक शिक्षा है। सभी भारतीय नागरिकों के हित के लिए सरकार को इस मुद्दे के समाधान के लिए निर्णायक कार्रवाई करनी चाहिए।

भारत का शैक्षिक इतिहास | Educational History of India

भारत में ज्ञान देने की एक लंबी परंपरा रही है। गुरुकुल प्राचीन भारत में एक प्रकार का शिक्षण संस्थान था जिसमें शिष्य (छात्र) उसी निवास में रहते थे जहाँ गुरु रहते थे।

विश्व की सबसे प्रारंभिक विश्वविद्यालय शिक्षा प्रणाली नालंदा थी। दुनिया भर के छात्र भारत की ज्ञान प्रणालियों की ओर आकर्षित हुए।

ज्ञान प्रणाली की कई शाखाओं की उत्पत्ति भारत में हुई। प्राचीन भारत में शिक्षा को एक उच्च गुण माना जाता था।

उस समय यूरोप में जो पुनर्जागरण और वैज्ञानिक चिंतन हुआ, वह भारत में नहीं हुआ।

अंग्रेजों ने उस समय तक भारतीय मामलों पर नियंत्रण कर लिया था और विभिन्न एजेंडा स्थापित कर चुके थे। शिक्षा के मामले में ब्रिटिश भारत को अभी एक लंबा रास्ता तय करना है। वहीं दूसरी ओर अंग्रेजों ने आधुनिक शिक्षा प्रणाली विकसित की जो आज भी भारत में उपयोग की जाती है।

उन्होंने देश की पूर्व शिक्षा प्रणालियों को बदलने के लिए अंग्रेजी-आधारित पद्धतियों का इस्तेमाल किया।

स्वतंत्रता के बाद से भारत की शैक्षिक प्रणाली की संरचना
Structure of India's Educational System since Freedom

भारत में शिक्षा के तीन चरण हैं:

बेसिक, सेकेंडरी और हायर एजुकेशन।

संविधान निर्माताओं ने संविधान ने छह मौलिक अधिकार दिए। भारत के स्वतंत्र होने के बाद, मौलिक अधिकारों में एक शिक्षा का अधिकार और जोड़ा गया था। इसने 6 से 14 वर्ष की आयु तक के प्रत्येक बच्चे के लिए निःशुल्क शिक्षा की अनुमति दी।

यह भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21A (Article 21A) द्वारा गारंटीकृत है।

सर्वशिक्षा अभियान (Sarva Shiksha Abhiyan – SSA) सभी बच्चों को प्रारंभिक शिक्षा उपलब्ध कराने का प्रयास करता है।

माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की आयु 14 से 18 वर्ष के बीच होती है।

सरकार ने राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के माध्यम से सर्वशिक्षा अभियान (Sarva Shiksha Abhiyan – SSA) को माध्यमिक शिक्षा तक विस्तारित किया है।

भारत में उच्च शिक्षा के तीन चरण स्नातक, परास्नातक और स्नातकोत्तर (एमफिल/पीएचडी) हैं।

राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान (Rashtriya Uchchatar Shiksha Abhiyan – RUSA) एक सरकार द्वारा प्रायोजित कार्यक्रम है जो देश भर के उच्च शिक्षा संस्थानों को रणनीतिक वित्त पोषण प्रदान करता है।

राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान 2013 (रूसा) | Rashtriya Uchchatar Shiksha Abhiyan 2013 (RUSA)

उच्च शिक्षा के लगभग 94% छात्र 369 राज्य विश्वविद्यालयों में पढ़ते हैं, जबकि 6% से भी कम छात्र 150 केंद्र-वित्त पोषित संस्थानों में पढ़ते हैं।

11वीं पंचवर्षीय योजना (2007-12) में कहा गया कि प्रमुख केंद्रीय संस्थानों के प्रति केंद्र के पूर्वाग्रह ने इन संस्थानों के लिए मुख्य रूप से वित्त पोषण को कम कर दिया है और इस प्रकार राज्य स्तर के संस्थानों की उपेक्षा की है।

उच्च शिक्षा में राज्य का निवेश घट रहा था। यूजीसी (UGC) की राज्य सरकारों को दरकिनार करते हुए राज्य संस्थानों को सीधे धन जारी करने की प्रणाली भी राज्यों के लिए अलगाव की भावना पैदा करती है।

रूसा ने इस पूर्वाग्रह को ठीक करने की कोशिश की। इस योजना का उद्देश्य राज्य संस्थानों को उनके शासन और प्रदर्शन के संबंध में वित्तपोषण करना है।

रूसा ने राज्य संस्थानों के प्रदर्शन में वृद्धि और अच्छे के लिए नियामकों के काम करने के तरीके में बदलाव का परिणाम दिखाया है। राज्य उच्च शिक्षा परिषद (SHEC) ने मध्यम अवधि की राज्य परिप्रेक्ष्य योजनाएँ बनाईं।

2018 में कैबिनेट ने इस योजना को जारी रखने का फैसला किया। रूसा (RUSA) पर केंद्र द्वारा नए सिरे से फोकस तभी सफल होगा जब इसे निष्पक्ष रूप से प्रशासित किया जाए और राज्य SHEC की सलाह को मानने के लिए तैयार हों।

भारतीय संविधान के शैक्षिक प्रावधान क्या हैं?
What are the educational provisions of the Indian Constitution?

राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांतों (Directive Principles of State Policy – DPSP) के अनुच्छेद 45 (Article 45) में कहा गया है कि सरकार को संविधान की स्थापना के 10 वर्षों के भीतर चौदह वर्ष की आयु तक सभी बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा प्रदान करनी चाहिए।

किन्तु इसके साकार नहीं होने पर 2002 के 86वें संविधान संशोधन अधिनियम ने अनुच्छेद 21-A (Article 21-A) को अधिनियमित किया।

एक मार्गदर्शक सिद्धांत होने के बजाय, इसने बुनियादी शिक्षा को मौलिक अधिकार का दर्जा दिया।

अनुच्छेद 45 (Article 45) में अब छह साल से कम उम्र के बच्चों के लिए प्रारंभिक बचपन की देखभाल और शिक्षा शामिल है।

मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 निम्नलिखित मापदंड स्थापित करता है:

अनुच्छेद 21-A (Article 21-A) को लागू करने के लिए संसद ने शिक्षा का अधिकार अधिनियम पारित किया।

इस अधिनियम ने सर्व शिक्षा अभियान (SSA) को लागू करने के लिए आवश्यक कानूनी समर्थन प्रदान किया।

सामाजिक सुरक्षा प्रशासन (Social Security Administration – SSA) एक संघीय कार्यक्रम है जो प्राथमिक शिक्षा के समयबद्ध सार्वभौमिकरण का आश्वासन देता है। यह 2000-01 से चालू है।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली की वर्तमान स्थिति का कारण | Reason for the Present Condition of Modern Education System

जैसा कि पहले कहा गया था, ब्रिटिश औपनिवेशिक प्रशासन ने भारत की आधुनिक शिक्षा प्रणाली को लागू किया।
कई आयोगों ने पूरे औपनिवेशिक काल में भारतीय शिक्षा प्रणाली की नींव रखी, जिसमें मैकाले मिनट और वुड डिस्पैच, साथ ही सैडलर आयोग और 1904 की भारतीय शिक्षा नीति शामिल है।

1948-49 में राधाकृष्णन ने विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (University Education Commission – UEC) का गठन किया।

इसने स्वतंत्र भारत की शिक्षा प्रणाली को नवगठित संप्रभु राष्ट्र की जरूरतों और आकांक्षाओं के अनुकूल बनाने के लिए आकार दिया।

यह भारतीय शिक्षा प्रणाली की मूल्य प्रणाली का प्रतिनिधित्व करता है।

प्रारम्भ में भारतीय शिक्षा प्रणाली पूरी तरह से ब्रिटिश सरकार के हितों को प्राप्त करने पर केंद्रित थी।
उदाहरण के लिए, मैकालेवाद ने शिक्षा के माध्यम से देशी संस्कृति को ब्रिटिश संस्कृति के साथ जानबूझकर बदलने पर जोर दिया।

आयोग के अनुसार, स्वतंत्र भारत में शिक्षा प्रणाली निम्नलिखित मूल्यों पर आधारित है :

- ज्ञान और बुद्धि दोनों ही बहुमूल्य वस्तुएँ हैं।
- सामाजिक व्यवस्था के उद्देश्य
- उच्च जीवन आदर्शों के लिए प्रशंसा

नेतृत्व विकास पर कोठारी आयोग | Kothari Commission on Leadership Development

- कोठारी आयोग के माध्यम से भारतीय शिक्षा प्रणाली की स्थापना हुई थी।
- नेतृत्व विकास पर कोठारी आयोग द्वारा निम्नलिखित विचार प्रस्तावित किए गए थे:
- शिक्षा प्रणाली के मानकीकरण के लिए 10+2+3 पैटर्न का इस्तेमाल किया जाना चाहिए।
- शिक्षा में कार्य अनुभव, सामुदायिक भागीदारी और राष्ट्रीय सेवा को शामिल करने के महत्व पर बल दिया गया।
- कई स्थानीय स्कूलों को कॉलेजों से जोड़ा जाना चाहिए।
- राष्ट्रीय और सामाजिक एकता प्राप्त करने के लिए सभी व्यक्तियों को समान अवसर मिलना चाहिए।

- 1985 तक शिक्षा खर्च सकल घरेलू उत्पाद के 2.9 प्रतिशत से बढ़कर सकल घरेलू उत्पाद का 6% हो गया था।
- आयोग के अनुसार एक कानूनी निषेध की आवश्यकता है। छात्रों को सामाजिक या धार्मिक मतभेदों के आधार पर पड़ोस के स्कूलों में विभाजित नहीं किया जाता है।
- शिक्षा की एक प्रणाली जिसमें प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा दोनों शामिल हैं।
- भारतीय शिक्षा सेवा (Indian Education Service – IES) अस्तित्व में आई।
- इस समिति के परिणामों ने 1968 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मार्ग प्रशस्त किया, जिसने भारतीय शिक्षा प्रणाली के भविष्य के विकास की नींव रखी।

1968 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति
National Policy on Education 1968

- इसने सांस्कृतिक और आर्थिक विकास के साथ-साथ राष्ट्रीय एकीकरण में सुधार के लिए "कट्टरपंथी सुधार" और शैक्षिक अवसरों के बराबरी का आह्वान किया।
- इसने शिक्षा पर सरकार के खर्च को जीडीपी के 5% से बढ़ाकर 6% कर दिया।
- इसके परिणामस्वरूप शिक्षक अधिक शिक्षा और प्रशिक्षण प्राप्त करने में सक्षम थे।
- तीनों भाषाओं का सूत्र इस प्रकार है :
- प्रारंभ में मातृभाषा/क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग करना चाहिए।
- हिंदी भाषी राज्यों के लिए आधुनिक भारतीय भाषा दूसरी भाषा होनी चाहिए।
- यदि राज्य हिंदी नहीं बोलते हैं, तो अंग्रेजी या हिंदी का उपयोग किया जाना चाहिए।
- हिंदी भाषी और गैर-हिंदी भाषी दोनों क्षेत्रों के लिए तीसरी भाषा अंग्रेजी या आधुनिक भारतीय भाषा हो सकती है।
- सभी भारतीयों के लिए एक आम भाषा बनाने के लिए सभी राज्यों में हिंदी को बढ़ावा दिया गया था।

1985 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति
National Education Policy of 1985

- इसका मिशन शिक्षा में असमानताओं को दूर करना और समाज के सभी सदस्यों, विशेषकर हाशिए पर रहने वालों को समान शैक्षिक अवसर देना है।
- देश भर में प्राथमिक विद्यालयों को बेहतर बनाने के लिए "ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड (Operation Blackboard)" शुरू किया गया था।
- इस शिक्षा नीति के द्वारा ही इग्नू (IGNOU) की स्थापना हुई थी।
- गांधी के दर्शन के आधार पर "ग्रामीण विश्वविद्यालय (Rural University)" दृष्टिकोण अपनाया गया था।
- यह ग्रामीण भारत में जमीनी स्तर पर आर्थिक और सामाजिक विकास को प्रोत्साहित करने के लिए किया गया था।

ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड (Operation Blackboard)

- ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड (Operation Blackboard) एक केंद्र द्वारा वित्त पोषित कार्यक्रम है जिसे 1987 में शुरू किया गया था। इसका प्रमुख लक्ष्य देश के सभी प्राथमिक स्कूलों को न्यूनतम आवश्यक सेवाएं प्रदान करना था।
- योजना का उद्देश्य प्राथमिक संस्थाओं में अध्ययनरत छात्रों को उनकी शिक्षा में सुधार के लिए अपेक्षित संस्थागत उपकरण एवं शैक्षिक सामग्री उपलब्ध कराना है।
- ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड में सुधार के लिए किए गए उपाय | Measures taken to improve Operation Blackboard
- राज्य सरकारें टूटे हुए उपकरणों को बदलने का प्रावधान करेंगी।
- छात्राओं के प्रतिधारण और नामांकन पर सकारात्मक प्रभाव डालने के लिए नियुक्त शिक्षकों में कम से कम 50 प्रतिशत महिलाएं होंगी।
- शिक्षकों के लिए विशेष रूप से डिजाइन किए गए प्रशिक्षण कार्यक्रमों की मदद से शिक्षकों को ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड शिक्षण सामग्री का उपयोग करने के लिए प्रशिक्षित किया जाएगा।

Summery

Thank You